पंचैती

पंचैती

(लघु पटकथा)

राजदेव मंडल



श्रुति प्रकाशन
दिल्ली

राजदेव मण्डल

ISBN :

मूल्य : भा. रू. ५०/-

पहिल संस्करण : २०१३

श्रुति प्रकाशन :

रजिस्टर्ड आॅफिस : ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली- ११०००८.

दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स- (०११) २५८८९६५७

Website : http://www.shruti-publication.com

e-mail : shruti.publication@shruti-publication.com

मुद्रक: अजय आर्टस्, दरिया गंज, नई दिल्ली-११०००२

अक्षर-संयोजक : उमेश मण्डल

डिस्ट्रिब्यूटर :

पल्लवी डिस्ट्रिब्यूटर, वार्ड न. ६, निर्मली (सुपौल), मो. ९५७२४५०४०५, ९९३१६५४७४२

PANCHAITY- Shotr Script Writing By Rajdeo Mandal.

परिचए-पात : राजदेव मंडल

जन्म : १५ मार्च १९६० ई.मे।
पिता : स्व. सोनेलाल मंडल उर्फ सोनाइ मंडल।
माता : स्व. फूलवती देवी।
पत्नी : श्रीमती चन्द्रप्रभा देवी।
पुत्र : निशान्त मंडल, कृष्णकान्त मंडल, विप्रकान्त मंडल।
पुत्री : रश्मि कुमारी।
मातृक : बेलहा (फुलपरास, मधुबनी)
मूलगाम : मुसहरनियाँ, पोस्ट- रतनसारा, भाया- िनर्मली, जिला- मधुबनी।
बिहार- ८४७४५२
मोबाइल : ९१९९५९२९२०
शिक्षा : एम.ए. (मैथिली, हिन्दी, एल.एल.बी)
ई पत्र : rajdeokavi@gmail.com
प्रकाशित कृति :
(१) अम्बरा- कविता संग्रह (२०१०)
(२) बसुंधरा कविता संग्रह (२०१३)
(३) हमर टोल- उपन्यास (२०१३)

पंचैती

(लघु पटकथा)

पुरुष पात्र-

१. धनेसर
२. रमुआ- ललिताक बाप
३. चारिटा ग्रामीण
४. सहदेव- किशनक पिता
५. मास्टर साहैब
६. पंच प्रमुख
७. तीनटा पंच
८. जमादार
९. किशन
१०. किछु पंच, ग्रामीण, धीया-पुता, पुलिस।)

स्त्री पात्र-

१. धनेसरक पत्नी
२. गीता- धनेसरक बेटी
३. किशनक माए

पहिल दृश्य-

स्थान- धनेसरक आँगन
समए- दिन
पात्र- धनेसर आ धनेसरक पत्नी।
(धनेसर अँगनामे प्रवेश करैत अछि। ओकरा चेहरापर परेशानीक भाव अछि। एनए-ओनए ताकैत पत्नीसँ पुछैए)

धनेसर- गीताक माए, एक गिलास पानि लाउ। बड़ी जोरसँ पियास लगल अछि।
गीताक माए- आब हम भात पसेबै आकि अहाँकेँ पानि देब?
धनेसर- किए? गीता केतए गेल अछि?
गीताक माए- बेटी परीक्षा दइले गेल अछि आ अहाँकेँ पतो नै अछि।
धनेसर- (मुँहपर तामसक भाव) की हेतै पढ़ि-लिखि कऽ किछो सुनबो केलिऐ?
गीताक माए- की सुनबै?
धनेसर- अहाँकेँ बुझले नै अछि जे गाममे की भेलै।
गीताक माए- हमरा काज धंधासँ फुरसति भेटतै तब ने।
धनेसर- रमुआक बेटी कोनो छौड़ा संगे उड़ि गेलै। फुर्रऽऽऽ।
गीताक माए- अँए! (अचरज भरल आँखिसँ पति दिस देखैत अछि।)
धनेसर- हँ...! बेसी पढ़ि-लिखि कऽ एहए सभ होइ छै।
गीताक माए- अहाँ तँ कोनो गपकेँ पकड़ि लइ छिऐ। ई सभ कहिया नै होइ छेलै। हँ, पहिने कम होइ छेलै आब बेसी होइ छै।
(समए बिहरौन (बिहरन) सन भऽ जाइ छै।)

कट टू.

दोसर दृश्य-

समए- दुपहरिया
स्थान- रमुआक दुआरि
(रमुआ माथपर हाथ देने चिन्तामे डुमल अछि। तखने गामक किछु लोक पहुँचैए। लड़कीकेँ भागि गेलाक कारणे अपन-अपन तामस परगट कऽ रहल अछि।)

ग्रामीण एक- (क्रोधमे) देखियौ ने, हम सभ परेशान छी आ ई घरमे मुँह घोंसिया कऽ पड़ल अछि।)

ग्रामीण दू- लाज-शरम तँ होइते नै छै। एनए जाति सबहक नाक कटि गेलै।

ग्रामीण तीन- धुर! गामक लोक तँ थू-थू कऽ रहल छै।

ग्रामीण चारि- नै पूछू काका, गामक लफंगा छौड़ा सभ कहै छेलै, जँ छौड़ीक अभाव छौ तँ चलि जो ओइ टोलपर। फीरीमे मिलि जेतौ। हमरा तँ तामसे देह बहीर भऽ गेल। काटि देबै सारकेँ।

ग्रामीण एक- नै नै, एनामे तँ जाति-जातिमे झग्गड़ बझि जेतौ। आ दूटा जातिमे झगड़ा हेतौ तँ तेसर जातिकेँ फैदा हेतै।

ग्रामीण तीन- मन तँ होइत अछि जे रमुआकेँ खुंडी-खुंडी कऽ दी।

ग्रामीण दू- पहिने चल पंच सबहक पास।

ग्रामीण एक- नै, पहिने अपना जातिमे फैसला कऽ लेबै।

ग्रामीण चारि- (रमुआ तरफ इशारा करैत) ओकरा कही, छौड़ीकेँ ताकि लाबतौ। नै तँ...। (हाथसँ इशारा करैत अछि।)

कट टू.

तेसर दृश्य-

समए- राति
स्थान- सहदेवक घर।
पात्र- किशन, सहदेव, किशनक माए, ललिता।
(किशन आ ललिता नुकाइत अँगनामे प्रवेश करैत अछि। ओकर पदचाप सुनि सहदेव लालटेन नेने घरसँ बाहर निकलैत अछि। लालटेनक इजोत किशन आ ललिताक मुँहपर पड़ैत अछि। सहदेव डरा जाइत अछि। झपटि कऽ किशनकेँ पकड़ैत अछि आ घरक भीतर लऽ जाइत अछि।)

सहदेव-	रमुआबेटीकैँ ऐठाम किए लाबलीही? बुझै छीही, रमुआ आ ओकर जाति सभ केते तमसाएल छै। अपन भला चाहै छीही तँ एकरा आपस घर पहुँचा दही नै तँ ई सभ जीनाइ मोसकिल कऽ देतौ। (किशन किच्छौ नै बजैए।) तूँ बजै किए नै छँह रौ?
किशन-	की बजबै? अहाँ तँ देखिते छिऐ जे हम दुनू गोटे एक-दोसरकैँ केते चाहै छिऐ।
सहदेव-	तोरा चाहने आ नै चाहनेसँ की हेतौ?
किशन-	हमरा चाहनेसँ की नै हेतै। हम दुनू गोटे बालिग छिऐ। हमरा कानून द्वारा बिआह करैक अधिकार छै।
सहदेव-	कानून अपना जगहपर छै आ पिछड़ल समाज अपना जगहपर अड़ल छै। ऐठाम ई सभ नै चलतौ। कहै छियौ, मारल जेमैँ।
किशन-	पता नै, अहाँ सभ पुरना गपकैँ कहिया तक लाधने रहबै। केतेक लोक कुरवान हैत रहतै। ठीक छै, हमरा फैसलासँ अहाँ डरै छिऐ तँ हम जा रहल छी। (ललिताक हाथ पकड़ि किशन जेबाक लेल तैयार होइत अछि। किशनक माए आबि कऽ आगूसँ रोकैत अछि।)
किशनक माए-	बौआ एते रातिकैँ केतए जेबहक? बातकैँ बुझहक। हमरा सभ एतेक तगतगर नै छी जे समाजसँ लड़ि सकब। (किशन ललिताक संगे चलि जाइत अछि। ओकरा माए चिचियाइत हल्ला करैत अछि।) रौ बौआ, रूकि जो रौऽऽऽ। की हेतै की नै। (कानए लगैत अछि।)

कट टू.

चारिम दृश्य-

समए- दिन
स्थान- गीताक घर।
पात्र- गीता, धनेसर, गीताक माए, एवं किछु धिया-पुता।
(घरक बाहरी भाग। गीता कुरसीपर बैसल अछि। आगूमे बैसल किछु धिया-पुता पढ़ि रहल अछि। दस बर्खक एकटा छौड़ा दौग कऽ अबैत अछि आ एकटा चिट्ठी गीताक हाथमे दैत अछि। फेर ओ शीघ्रतासँ आपस भऽ जाइत अछि। चिट्ठी खोलि गीता पढ़ए लगैत अछि।)

गीता- ओह! ललिता मोसीबतमे फँसि गेलै। एकरा मदति केनाइ बड़ जरूरी छै।
(चिट्ठीकेँ फाड़ि ओहीठाँ फेकि दैत अछि आ बगलमे ठाढ़ साइकिल लऽ कऽ विदा होइत अछि।)
अँगना दिस घूमि) माएऽऽ हम कनीकालक बाद आपस एबौ। (साइकिल तेजीसँ बढ़बैत अछि। धिया-पुता हल्ला करैत पड़ा जाइत अछि।)

कट टू.

पाँचम दृश्य-

समए- दिन।
स्थान- सड़क।
पात्र- गीता।
(गीता परेशान मुद्रामे साइकिलसँ जा रहल अछि। अपन प्रेमक बीतल कथामे डुमल अछि। सड़कपर चलि रहल। निर्देशानुसार...।)

कट टू.

छअम दृश्य-

स्थान- मास्टर साहैबक घर।
पात्र- गीता, मास्टर साहैब।
(सेवा निवृत्त मास्टर साहैब अपना नीजी पुस्तकालमे पढ़ि रहल छथि।)

गीता- (प्रवेश करैत) परनाम सर।

मास्टर सहैब- (असीरवाद दैत) आबह, बैसह। बहुत दिनक बाद देखलियौ। कोनो विशेष गप छै की?

गीता- हम अहाँसँ मदति लइले आएल छी।

मास्टर साहैब- केहेन मदति?

गीता- अहाँ तँ ललिता आ किशनक बारेमे सभ किछु जनिते हेबै। एहेन स्थितिमे...।

मास्टर साहैब- सभ किछु बुझै छिऐ अपन समाज रूढ़िवादी छै। हमर तँ सभ दिनसँ कोशिश रहल अछि जे ई जातिक बंधन टुटै। समाजकेँ बदलैले पूरा जिनगी लगा देलिऐ। किन्तु समाज नै बदलल। खैर, एतेक दिनक पछाति तूँ कमसँ कम ऐ बातक लेल ठाढ़ तँ भेलैँ। हमरा बुते जेते संभव हेतौ तेते मदति जरूर करबौ।

कट टू.

सातम दृश्य-

समए- दिन।
स्थान- गीताक घर।
पात्र- गीता आ धनेसर दुनू परानी।
(धनेसर चिट्ठीबला कागतक टुकड़ी हाथमे नेने पत्नी दिस बढ़ैत अछि। ओही समैमे गीता साइकिल नेने प्रवेश करैत अछि। ओकरापर नजरि पड़िते धनेसर तमसा जाइत अछि।)

धनेसर- (सक्रोध) गीता! एनऽ आ। (कागत देखबैत) ई की छिऐ?

गीता- (चुपचाप ठाढ़ अछि।)

धनेसर- तूँ जबाव किए ने दइ छैँ?

पत्नी- (बिच्चेमे आबि) अहाँ किए हमरा बेटीपर तमसा रहल छिऐ।

धनेसर- अहीं एकरा कपारपर चढ़ा नेने छिऐ। देखियौ, ई ललिताक चिट्ठी। (गीता दिस घूमि कऽ)
तोरासँ एहेन आशा नै छल।

गीता- ऐमे ओकरा सबहक कोनो गलती नै छै।

धनेसर- (तामस बढ़ि जाइत अछि।) लगैए, तोराे दिमाग खराप भऽ गेलौ। अखनिसँ तूँ केतौ नै जा सकै छैँ। चल घरक अन्दर। (हाथ पकड़ि धकिया कऽ घरक अन्दरमे दऽ कऽ बाहरसँ केबाड़ लगा दैत अछि।)

पत्नी- अहाँ बताह जकाँ किए करै छिऐ।

धनेसर- हमरा एलासँ पहिने जँ घर खोलबै तँ हमरा जीअत नै देखबै।
(झपटि कऽ झोरा लैत अछि आ तेजीसँ बाहर निकलि जाइत अछि।)

पत्नी- आब हम की करबै। (कानए लगैत अछि।)

कट टू.

आठम दृश्य-

समए- दिन।
स्थान- धनेसरक घर।
पात्र- गीता आ धिया-पुता, किछु लोक।
(गीता घरक भीतरीमे टहलि-बुलि रहल अछि। मुँहपर बेचैनीक भाव छै। खिड़की खोलैत अछि।)
किछु लोक सड़कपर जा रहल अछि। एकटा आठ बर्खक छौड़ाकेँ गीता सोर पाड़ैत अछि। आ ओकरा इशारासँ केबाड़ खोलैले कहैत अछि। जे बाहरसँ बन्न अछि। छौड़ा टेबुलपर चढ़ि केबाड़ खोलि दैत अछि।)

कट टू.

नअम दृश्य-

समए- दिन।
स्थान- गामक पंचायत स्थल।
गामक बाहर गाछतर चबुतरापर पंच-प्रमुख आ पंचगण बैसल अछि। चबुतराक निच्चाँमे गौआँ-घरूआ सभ जमा भेल अछि। किछु युवक सभ लाठी नेने किशन आ ललिताकेँ घेरने अछि। ग्रामीण सभ आपसमे घोलफच्चका कऽ रहल अछि।

पंच प्रमुख- सभटा गप सुनलौं। वास्तबमे, अपना गाम आ समाजक लेल ई घिनौना घटना छी अइले ओहने भरिगर डण्ड हेबाक चाही।

पंच एक- हँ... हँ... अहाँ ठीके कहै छिऐ। जँ ऐ तरहेँ हैत रहतै तँ केकरो इज्जति-परतिष्ठा नै बँचतै।

पंच दू- ने जातिक बन्धन आ ने बड़ छोटक खियाल। हमरा सबहक जमानामे कहियो एना भेल छेलै।

पंच एक- (किशन दिस हाथ चमकबैत) ई सभ पढ़ि-लिखि कऽ गामक नाओं की करतै। उनटे समाज आ जातिकेँ दाग लगा देलकै।
(भीड़सँ गीता निकलैत अछि। ओकर नजरि अपना बाबूसँ मिलैत अछि आ पिताक नजरि झूकि जाइत अछि।)

पंच प्रमुख- (क्रोधमे) एकरा केश कटा कऽ कारिख-चुन लगा आ गदहापर बैसा दही।

पंच एक- हे रौ, कारिख-चुन एनए ला। लगा, मुँह-कानमे। (लाबैत अछि।)

पंच दू- ऐ छौड़ीकेँ पीठपर कोड़ा लगबाक चाही।
(भीड़केँ ठेलैत गीता आगू अबैत अछि।)

पंच एक- घोड़ाक कोड़ा कहाँ छौ? ला हमरा हाथमे। (लाबैत अछि।)

गीता- यौ पंच मरमेसर, कानूनक हिसाबसँ अहाँक फैसला गलत अछि। देश-दुनियाँ केते आगू बढ़ि गेलै आ अहाँ सभ ओही पुरना गपमे लटपटाएल छी। परेम कएल नै जाइ छै, भऽ जाइ छै। आ परेम जाति, धरम नै देखै छै। आब तँ सरकारो

एकर मान्यता दऽ देने छै। कानून बनि गेल छै। अहाँ सभ तँ कानूनक रखबार छी। कनी सोचियौ, अहाँ सबहक फैसलासँ दूटा जिनगी बेरबाद भऽ जेतै। अपन वर्चस्व देखबैले ई अन्याय कऽ रहल छिऐ। दुनू बालिग छै, तँए बिआह करबाक लेल स्वतंत्र छै।

पंच दू- धनेसरजी, अहाँ अपना बेटीकेँ एहने बात सभ सिखौने छिऐ? अहाँ तँ समझदार छी। एतेक लोकक बीचमे अहिना बजल जाइ छै? एहेन गप बजैत लाज हेबाक चाही।

(पुलिसक गाड़ी धड़धड़ा कऽ अबैत अछि। जमादारक संग मास्टर साहेब उतरैत अछि। सभ ताकए लगैत अछि।)

मास्टर साहैब- लाज तँ अहाँ सभकेँ हेबाक चाही। ऐ दुनूकेँ कानूनी शादी भऽ गेल छै। एकर पछातिओ अहाँ अतियाचार कऽ रहल छिऐ।

जमादार- (तामससँ लोककेँ हटबैत) जे पंच छी, से सभ सुनि लिअ। ऐ दुनूकेँ बिआहक कानूनी कागत थानामे जमा छै। अहाँ सभ अतियाचार कऽ रहल छिऐ। कानूनक हिसाबसँ अहाँ सभ गिरफ्तार भऽ जाएब।

(जमादारक बात सुनि सभ पंचक माथा झूकि जाइत अछि। जमादार भीड़मे ढुकि किशन आ ललिताकेँ बाहर निकालैत अछि। किशन आ ललिता मास्टर साहैबक पएर छुबैत अछि। पाछूसँ गीता निकलैत अछि आ मास्टर साहैबकेँ प्रणाम करैत अछि।)

मास्टर साहैब- (असिरबाद दैत) गीता, तोरा काजसँ हम बड्ड खुशी छी। (धनेसर दिस ताकि।) यौ धनेसरजी, अहाँक बेटी समाजक लेल बड़का काज केलक। अहाँक गौरव हेबाक चाही। असिरबाद दियौ।

(धनेसर गीताकेँ असिरबाद दैत अछि।)

शब्द संख्या- १५३५

कट टू.

पंचैती

समाप्त।